श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक दर्शनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में

21

विश्वास शर्मा
स्मृति सिंह

एसडीजी 4 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सूत्रपात किया गया, जिससे सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित हो सके। शिक्षा को छात्र–केन्द्रित करके सतत् सीखने की कला को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन सबके आधार में भारतीय ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक मूल्यों को रखा गया है, क्योंकि भारतीय ज्ञान परम्परा व दर्शन न केवल सांसारिक जीवन का ज्ञान प्रदान करते हैं अपितु पूर्ण आत्मज्ञान के साथ–साथ मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

विश्व की प्राचीनतम् विश्वविद्यालय एवं दिग्दर्शक आचार्यगण (शिक्षक) भारत में ही उदित हुए हैं। भारत ने सर्वदा से विश्व का मार्गदर्शन किया है। इस समृद्ध विरासत की कड़ियों में श्रीमद्भगवद्गीता का भी स्थान निहित है। इस वेदत्रयी काव्य को माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद (प्रयागराज) ने श्यामल रंजन मुखर्जी बनाम निर्मल रंजन मुखर्जी व अन्य के प्रकरण में (याचिका संख्या 56447, सन् 2003) 30 अगस्त, 2007 को श्रीमद्भगवद्गीता को समस्त विश्व का धर्मशास्त्र मानते हुए राष्ट्रीय धर्मशास्त्र की मान्यता देने की संस्तुति की। डॉ. गेड्डीज के अनुसार –''पाश्चात्य जगत में भारतीय साहित्य का कोई भी ग्रन्थ इतना अधिक उद्धरित नहीं होता जितना कि भगवद्गीता, क्योंकि यही सर्वाधिक प्रिय है।'' (स्वामी, प्रभुपाद, 2016, पृ. 12)

श्रीमद्भगवद्गीता में 700 श्लोक, 9411 पद एवं 24227 अक्षर हैं। श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के छठे पर्व (भीष्म पर्व) का अंश है, जिसमें शैक्षिक दर्शन

विश्वास शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
Email: vishyamni110bhu@gmail.com
स्मृति सिंह
शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Email: smritisingh69228@gmail.com
Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB355-F26.Ch.21
Book: भारत में नवोन्मेषी शोधः राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली और तकनीकी का संगम
Plagiarism Report: 26%

का सारतत्व समाहित है। इस अंश में शिक्षक स्वरूप योगीराज श्रीकृष्ण द्वारा शिष्य अर्जुन को शिक्षा प्रदान की गई है। यह ग्रंथ शिक्षा दर्शन के लिए सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि यह लिखित, प्रचलित और सर्वसुलभ है। सभी प्रचलित दार्शनिक परम्पराओं एवं सिद्धान्तों का सार इस ग्रंथ में मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक दर्शन का परिवर्तित स्वरूप (समकालीन आवश्यकता के अनुरूप) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दृष्टिगत हो रहे है।

शिक्षक –

शिक्षक ही हैं जो माँ द्वारा प्रदान की गई शारीरिक आकार में भविष्योन्मुख ज्ञान का प्रवाह संचारित करते हैं। गीता की सर्जना गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में हुई है, जिसमें श्रीकृष्ण एक आदर्श शिक्षक बनकर शिष्य अर्जुन को सही निर्णय लेने में पथ–प्रदर्शक का कार्य करते हैं। अध्याय 4 के 34वें श्लोक में शिक्षक के बारे में लिखा गया है–

तद्विद्वि प्राणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्तवदर्शिनः।। 4/34।।

(अर्थात, गुरु को तत्वदर्शी होना चाहिए ताकि छात्रों के जटिल से जटिल प्रश्नों का उत्तर धैर्यता से देकर उनका मार्गदर्शन कर सके।)

सर्वगुह्यतम भूयः श्रष्णु में परमं वचः।
इष्टोअसि में दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि ते दृढ़म।।18/64।।

(अर्थात, श्रीकृष्ण कहते है– सम्पूर्ण गोपनीय से अति गोपनीय परम रहस्ययुक्त वचन तुम सुनो! तू मेरा अति प्रिय है, अतः मैं तुमसे परम हितकारक वचन कहूँगां।)

इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ के 18वें अध्याय के श्लोक संख्या 20, 60, 62 व 63 के माध्यम से सिद्ध हस्त शिक्षक अपने शिष्य में लक्ष्य प्राप्ति के लिए विश्वास जगाता है और उसकी समस्या का समाधान करके कल्याण के मार्ग को सुनिश्चित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षक को भविष्य निर्माता बताते हुए राष्ट्र निर्माण में उनके कार्य को सराहा गया है। शिक्षक अपने विद्वता एवं नेक योगदान के कारण ही समाज में सबसे सम्मानित दर्जा प्राप्त करते हैं। विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य, ज्ञान, कौशल आदि से समृद्ध केवल शिक्षक ही बना सकता है। वर्तमान शिक्षा नीति में उपरोक्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत् व्यावसायिक विकास (सीपीडी), कैरियर मैनेजमेंट और प्रगति (सीएमपी) एवं शिक्षक शिक्षा में सुदृढ़ता पर बल दिया गया है, जिससे शिक्षक को कृष्ण जैसा आदर्शवादी एवं सर्वशक्तिमान बनाया जा सके।

शिष्य (छात्र)–

श्रीमद्भगवद्गीता के चौथे एवं तेरहवें अध्याय में शिष्य (छात्र) के लक्षणों को बतलाया गया है। एक सर्वगुण सम्पन्न व मानवीय गुणों से परिपूर्ण छात्र की संकल्पना की गई है।

अमानित्वमदाम्भित्वहिंसा क्षन्तिरार्जवम्।
आचार्योंपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः।।13/7।।

(अर्थात, श्रेष्ठता के अभिमान एवं दम्भाचरण का अभाव, प्राणी को न सताना, क्षमाभाव, मन–वाणी की सरलता, श्रद्धा सहित गुरु की सेवा, बाहर–भीतर की शुद्धि और मन–इन्द्रिय सहित शरीर का निग्रह।)

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
अन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्।।13/8।।

(अर्थात, लोक–परलोक के सम्पूर्ण भोगों में आशक्ति एवं अहंकार का अभाव, जन्म, मृत्यु, जरा, रोग, दुःख, दोष का बार–बार विचार करना।)

शिष्य (छात्र) को अपनी बल, बुद्धि, विद्या पर अभिमान नहीं करना चाहिए। दम्भ रहित, हिंसा रहित सभी के प्रति मन, वचन एवं कर्म में एकरूपता रखते हुए, अपने दायित्वों का पालन करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी छात्रों में संज्ञानात्मक समझ के साथ–साथ चरित्र निर्माण की बात करता है। 5+3+3+4 के डिजाइन में प्रथम फाउडेशनल स्टेज में संवादात्मक कक्षा शैली की बात कही गई है, जो गीता में कृष्ण व अर्जुन के संवाद की शैली से मेल खाती है। बालक के जिज्ञासायुक्त प्रश्नों का उत्तर शिक्षक को सहज ही देना चाहिए। ईसीसीई का उद्देश्य बच्चों में मानवीय संवेदना, शिष्टाचार, नैतिकता, स्वच्छता, समूह–कार्य, सांस्कृतिक विकास आदि को जागृत करना है।

गुरू–शिष्य सम्बन्ध–

श्रीमद्भगतद्गीता का सृजन शिष्य अर्जुन के किंकर्तव्यमूढ़ता और युद्ध पूर्व होने वाले बेचैनी को दूर करने के लिए हुआ है, जिसमें गुरू श्रीकृष्ण शिष्य के संशय को दूर करते हैं। गीता के अध्याय 4 के तीसरे श्लोक में कहा गया है–

भक्तोऽसि मे शखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ।।4/13।।

(अर्थात, शिष्य भक्त के रूप में गुरु का अत्यन्त प्रिय एवं कभी मित्र के रूप में शिक्षक कदम से कदम मिलाने वाला सहभागी होता है।)

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ।।18/65।।

(अर्थात, हे अर्जुन! तू मुझमें अपने मन को लगाने वाला हो और मुझको प्रणाम कर। ऐसा करने से तू मुझे ही प्राप्त होगा, यह मैं तुझसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ, क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय है।)

भगवद्गीता ने गुरु–शिष्य सम्बन्ध को अत्यन्त मधुरम्, सुदृढ़, सखा–भाव से परिपूर्ण बताया है, जो एक–दूसरे के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार सिद्धान्त व विजन को प्राप्त तभी कर सकते हैं, जब कृष्ण–अर्जुन जैसा गुरु–शिष्य सम्बन्ध, भारतीय विद्यालयों में हो पाए। संविधान की परिकल्पना के अनुरूप समावेशी एवं बहुलवादी समाज का निर्माण प्रथमतः कक्षाओं

में ही हो सकता है और शिष्यों के मन–चित्त में भारतीय मूल्यों का प्रवेश केवल शिक्षक ही करा सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य –

गीता के प्रथम छः अध्यायों में 'कर्मयोग', मध्य के छः अध्यायों में 'ज्ञानयोग' तथा अन्तिम छः अध्यायों में 'भक्तियोग' पर बल दिया गया है, अर्थात कर्म, ज्ञान व भक्ति (शरीर, मस्तिष्क व हृदय) में समन्वय किया गया है, आशय यह है कि व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर ध्यान दिया गया है। अध्याय 4 में विभिन्न श्लोकों द्वारा शिक्षा (ज्ञान) के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमहि विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्ध कालेनात्मनि विन्दति।। 4/38।।

(अर्थात, इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को किसी भी काल में कर्मयोग द्वारा शुद्ध मनुष्य स्वयं ही आत्मा में पा लेता है।)

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तपः।
सर्वकर्मखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।। 4/39।।

(अर्थात, जितेन्द्रिय, साधनपरायण और श्रद्धावान् मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त अविलम्ब भगवतप्राप्ति रूपी परम् शान्ति को प्राप्त हो जाता है।)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय जड़ों व गौरवों से जुड़े होने की बात कही गई है। यह नीति ऐसे व्यक्ति/नागरिक का विकास करना चाहती है जिसमें तर्कसंगत विचार, करूणा, सहानुभूति, साहस, लचीलापन, रचनात्मकता, नैतिक मूल्य समाहित हो। गीता में उपरोक्त विशेषताओं को कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग से प्राप्त किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम –

वह रूप–रेखा जिससे शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक–छात्र अपनी महती भूमिका अदा करते हैं और शिक्षक, छात्र को व्यवहार परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करता है, पाठ्यक्रम कहलाता है। गीता में 'परा' व 'अपरा' पाठ्यक्रम को समाहित किया गया है। 'परा विद्या' को 'अपरा विद्या' से उच्च बताया गया है, क्योंकि 'परा' पाठ्यक्रम से आत्मज्ञान की अनुभूति होती है, जबकि 'अपरा' पाठ्यक्रम में भौतिक जगत के ज्ञान, वैज्ञानिक विषय व बुद्धि का अध्ययन किया जाता है। ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त सभी सांसारिक ज्ञान 'अपरा' पाठ्यक्रम का भाग है। 'परा' विद्या के उच्चतम होने का एक कारण यह भी है कि 'अपरा' विद्या वह साधन है जिसके माध्यम से 'परा' विद्या तक पहुंचा जा सकता है। अध्याय 15 के 16वें श्लोक में लिखा है–

द्वाबिमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।15/16।।

(अर्थात्, इस संसार में नाशवान एवं अविनाशी दो प्रकार के पुरुष हैं। इसमें सभी भूतप्राणियों के शरीर नाशवान और जीवात्मा अविनाशी कहा जाता है।)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पैरा 4 में पाठ्क्रम की चर्चा में अमूर्त चिन्तन की बात की गई है। साथ ही पैरा 4 के 5वें सम्भाग में आलोचनात्मक चिंतन के तहत खोज, परिचर्चा, विश्लेषण आधारित अधिगम को समाहित किया गया है। भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के लिए कला–समन्वय का दृष्टिकोण लाया गया है। एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धान्तों के आधार पर एनसीएफएसई 2020–21 (पाठ्यक्रम) लाकर ''भारत का ज्ञान'' कराते हुए ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' की संकल्पना को साकार किया जाएगा। 46 सम्भागों में विभाजित पैरा 4 का अन्तिम लक्ष्य ऐसे पाठ्यक्रम को तैयार करना है, जिससे विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति से जोड़तें हुए 'अपरा' विद्या के माध्यम से 'परा' विद्या के मार्ग तक ले जाना है।

शिक्षण विधि –

शिक्षण विधि का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शिक्षण के उद्देश्य से होता है। जिसका आधार प्रयोजनशीलता एवं छात्र की रूचियाँ होती हैं। गीता में गुरु (कृष्ण) ने विभिन्न तर्कों, उदाहरणों, प्रश्नों, प्रतिप्रश्नों का प्रयोग करके शिष्य (अर्जुन) के ज्ञान पर पड़े आवरण को हटाया। गीता बालक को व्यक्तिगत हित को त्यागकर, सामाजिक हित के लिए तैयार रहना सीखाता है। अन्य विधियों के साथ मुख्यतः दो शिक्षण विधि– अनुकरण एवं प्रश्नोत्तर विधि, विशेषरूप से इस ग्रंथ में परिलक्षित होते हैं।

अनुकरण विधि – गीता के अध्याय 3 के 21वें श्लोक में वर्णित है–

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।3/21।।

(अर्थात, श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार कार्य करने लगते हैं।)

अनुकरण विधि की सहायता से ही रटंट पद्धति पर कुठाराघात किया जा सकता है, परिणामतः बालकों में अवधारणात्मक समझ जागृत होगी। शिक्षा नीति में निहित जीवन कौशल के आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य आदि को सुदृढता अनुकरण विधि से प्राप्त होगी।

प्रश्नोत्तर विधि– विभिन्न धर्मों का पवित्र ग्रन्थ प्रश्नोत्तर से ही आरम्भ होते हैं, यथा– कुरान मजीद, यक्ष–युधिष्ठिर संवाद, बाइबिल आदि। श्रीमद्भगवद्गीता का सर्जना भी प्रश्नोत्तर से हुआ है। अर्जुन के मन में उठने वाले संशय को प्रश्नोत्तर विधि से दूर किया गया। गीता के दूसरे घटना में महाराजा धृतराष्ट्र कुरुक्षेत्र में हो रहे महासमर के बारे में होने वाले जिज्ञासा को संजय के सामने प्रश्न के रूप में व्यक्त करते हैं, तो उत्तर देकर संजय जिज्ञासा को शान्त करते हैं। मानवीय गुण के कारण आजीवन उत्पन्न होने वाले जिज्ञासा प्रश्नगत होकर सामने उदित होते रहते हैं। वैसे भी बालक का मन गवेषणायुक्त होता है।

जिस रचनात्मक और तार्किक सोच के सिद्धान्त पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जोर दे रहा है, उसे प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। नवाचार और आउट–ऑफ–द–बॉक्स विचारों को प्रोत्साहन प्रश्नोत्तर विधि से प्राप्त होगा।

प्रश्नोत्तर एवं अनुकरण विधि का प्रयोग प्रत्येक स्तर पर किया जाता है, परन्तु इसकी महत्ता प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) में अधिक दृष्टिगोचर होती हैं। खेल, अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, चित्रकला, नाटक, कठपुतली आदि ऐसी गतिविधियां हैं जो बालमन को अधिक प्रभावित एवं शैक्षणिक रूप से सबल बनाती हैं, अधिकांशतः अनुकरण विधि या प्रश्नोत्तर विधि पर ही आधारित होती हैं।

निष्कर्ष –

वर्तमान शैक्षिक परिस्थिति में यथाउचित बदलाव तथा सुधार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिस ध्येय को लेकर प्रकाशित हुआ है, उसका सार तत्व राष्ट्रीय धर्मशास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता में विद्यमान है। ज्ञानी व स्नेही शिक्षक, श्रद्धावान व विनयशील शिष्य, आदर्श गुरु–शिष्य सम्बन्ध, परा (आत्मज्ञान) एवं अपरा (सांसारिक व भौतिक) पाठ्यक्रम, प्राचीन समृद्ध भारतीय संस्कृति का अनुकरण; कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग से शरीर व मस्तिष्क की शुद्धता की प्राप्ति के उपरान्त भारतीय मूल्यों को आत्मसात करते हुए सर्वश्रेष्ठ विनयशील व्यक्ति या नागरिक बन सकते है।

अन्ततः, श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक दर्शन का महत्व, जितना महासमर के समय तात्कालिक भारत के लिए था, उतना ही समकालिक भारत के लिए भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. श्रीमद्भगवद्गीता (वि0सं0 2065), गोरखपुरः गीता प्रेस।
2. अड़गड़ानन्द, स्वामी महाराज (2014), यर्थात गीता, मुम्बई, श्री परमंहस स्वामी अड़गड़ानन्द जी आश्रम ट्रस्ट।
3. ओड, लक्ष्मीकांत के. (2010), शिक्षा के दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. खरे, रमेशचन्द्र (2015), श्रीमद्भगवद्गीता (सरल गीता), वाराणसी प्राच्य प्रकाशन।
5. रुहेला, सत्यपाल (2014), शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. सेनकर, अर्जुन (2019), श्रीमद्भगवद्गीता में निहित जीवन–दर्शन एवं शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, प्रकाशित शोध प्रबन्ध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
7. मालवीय, राजीव (2013), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद(प्रयागराज)ः शारदा पुस्तक भवन।